|| श्री राघवेंद्र अक्षरमालिका स्तोत्र ||

अज्ञान नाशाय विज्ञान पूर्णाय सुज्ञानदात्रे नमस्ते गुरो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १ ||
आनंदरूपाय नंदात्मज श्रीपदांभोजभाजे नमस्ते गुरो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २ ||
इष्टप्रदानेन कष्टप्रहाणेन शिष्टस्तुत श्रीपदांभोज भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३ ||
ईडे भवत्पाद पाथोजमाध्याय भूयोऽपि भूयो भयात् पाहि भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४ ||
उग्रं पिशाचादिकं द्रावयित्वाशु सौख्यं जनानां करोशीष भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ५ ||
ऊर्जत् कृपापूर पाथोनिधेमंक्षु तुष्टोऽनुगृह्णासि भक्त्वान् विभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ६ ||
ऋजूत्तम प्राण पादार्चनप्राप्त माहात्म्य संपूर्ण सिद्धेश भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ७ ||
ऋभुस्वभावाप्त भक्तेष्टकल्पद्रु रूपेश भूपादि वंद्य प्रभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ८ ||
ऋद्धं यशस्ते विभाति प्रकृष्टं प्रपन्नार्तिहंतर्महोदार भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ९ ||
क्लिप्ताति भक्तौघ काम्यार्थ दातर्भवांबोधि पारंगत प्राज्ञ भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १० ||
एकांत भक्ताय माकांत पादाब्ज उच्चाय लोके नमस्ते विभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ११ ||
ऐश्वर्यभूमन् महाभाग्यदायिन् परेशां च कृत्यादि नाशिन् प्रभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १२ ||
ओंकार वाच्यार्थभावेन भावेन लब्धोदय श्रीक योगीश भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १३ ||
और्वानलप्रख्य दुर्वादिदावानलैः सर्वतंत्र स्वतंत्रेश भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १४ ||
अंभोजसंभूतमुख्यामराराध्य भूनाथ भक्तेश भावज्ञ भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १५ ||
अस्तंगतानेकमायादि वादीश विद्योतिताशेष वेदांत भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १६ ||
काम्यार्थदानाय बद्धादराशेष लोकाय सेवानुसक्ताय भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १७ ||
खद्योतसारेषु प्रत्यर्थिसार्थेशु मध्याह्न मार्तांड बिंबाभ भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १८ ||
गर्विष्ठ गर्वांबुशोषार्यमात्युग्र नम्रांबुधेर्यामिनी नाथ भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || १९ ||
घोरामयध्वांत विध्वंसनोद्दाम देदीप्य मानार्क बिंबाभ भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २० ||

ङणत्कारदंडांक काषायवस्त्रांक कौपीन पीनांक हंसांक भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २१ ||
चंडीश कांडेश पाखंड वाक्कांड तामिश्रमार्तांड पाषंड भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २२ ||
छद्माणुभागं नविद्मस्त्वदंतः सुसद्मैव पद्मावधस्यासि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २३ ||
जाड्यंहिनस्त्विज्वरार्शःक्षयाद्याशु ते पाद पद्मांबुलेशोऽपि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २४ ||
झशध्वजीयेष्वलभ्योरुचेतः समारूढमारूढ वक्षोंग भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २५ ||
ञांचाविहीनाय यादृच्छिक प्राप्त तुष्टाय सद्यः प्रसन्नोऽसि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २६ ||
टीकारहस्यार्थ विख्यापनग्रंथ विस्तार लोकोपकर्तः प्रभो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २७ ||
ठंकुर्वरीणाम मेयप्रभावोद्धरापाद संसारतो मां प्रभो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २८ ||
डाकिन्यपस्मार घोराधिकोग्र ग्रहोच्चाटनोदग्र वीराग्र्य भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || २९ ||
ढक्काधिकध्वान विद्रावितानेक दुर्वादिगोमायु संघात भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३० ||
णात्मादिमात्रर्णलक्ष्यार्थक श्रीपतिध्यानसन्नद्धधीसिद्ध भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३१ ||
तापत्रय प्रौढ बाधाभिभूतस्य भक्तस्य तापत्रयं हंसि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३२ ||
स्थानत्रयप्रापकज्ञानदातस्त्रिधामांघ्रिभक्तिं प्रयच्छ प्रभो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३३ ||
दारिद्र्य दारिद्र्य योगेन योगेन संपन्न संपत्ति मा देहि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३४ ||
धावंति ते नामधेयाभि संकीर्तनेनैन सामाशु वृंदानि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३५ ||
नाना विधानेक जन्मादि दुःखौघतः साध्वसंसंहरोदार भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३६ ||
पाता त्वमेवेति माता त्वमेवेति मित्रं त्वमेवेत्यहं वेद्मि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३७ ||
फालस्थदुर्दैववर्णावळीकार्यलोपेऽपि भक्तस्य शक्तोऽसि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३८ ||
बद्धोस्मि संसार पाशेन तेऽंघ्रिं विनान्या गतिर्नेत्यमेमि प्रभो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ३९ ||
भावे भजामीह वाचा वदामि त्वदीयं पदं दंडवन्नौमि भो ।
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४० ||

मान्येषु मान्योऽसि मत्या च धृत्या च मामद्यमान्यं कुरुद्राग्विभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४१ ||
यंकाममाकामये तं न चापं ततस्त्वं शरण्यो भवेत्येमि भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४२ ||
राजादि वश्यादि कुक्षिंभरानेकचातुर्यविद्यासु मूढोऽस्मि भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४३ ||
लक्ष्येशु ते भक्तवर्गेशु कुर्वेकलक्ष्यं कृपापांगलेशस्य मां |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४४ ||
वारांगनाद्यूतचौर्यान्य दारारतत्वाद्यवद्यत्वतो मां प्रभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४५ ||
शक्तो न शक्तिं तव स्तोतुमाध्यातुमीदृक्कहं करोमीश किं भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४६ ||
षड्वैरिवर्गं ममारान्निरकुर्वमंदोहरीरांघ्रिरागोऽस्तुभो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४७ ||
सन्मार्गसच्छास्त्र सत्संग सद्भक्ति सुज्ञान संपत्ति मादेहि भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४८ ||
हास्यास्पदोऽहं समानेष्टकीर्त्या तंवांघ्रिं प्रपन्नोऽस्मि संरक्ष भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ४९ ||
लक्ष्मी विहीनत्व हेतोः स्वकीयैः सुदूरीकृतोस्म्यद्य वाच्योऽस्मि भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ५० ||
क्षेमंकरस्त्वं भवांभोधि मज्जज्जनानामिति त्वां प्रपन्नोऽस्मि भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ५१ ||
कृष्णावधूतेन गीतेन मात्रक्षराद्येन गाथास्तवेनेढ्य भो |
श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य श्रीराघवेंद्रार्य पाहि प्रभो || ५२ ||